लोकप्रियसाहित्यमाला - 6

सुगतकविरत्न-
शान्तिभिक्षुशास्त्रिकृतं

बुद्धोदयकाव्यम्

(प्रस्तावना-कविपरिचय-हिन्द्यनुवाद-टिप्पणी-परिशिष्टादिभिरलंकृतम्)

सम्पादकः
संघसेन सिंहः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 6

सुगतकविरत्न-

शान्तिभिक्षुशास्त्रिकृतं

बुद्धोदयकाव्यम्

(प्रस्तावना-कविपरिचय-हिन्द्यनुवाद-टिप्पणी-परिशिष्टादिभिरलंकृतम्)

सम्पादकः

संघसेन सिंहः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

[ईसवीये 1988मिते वर्षे प्रकाशितायां 'विद्याभारती'पत्रिकायां
मुद्रितस्य महाकविना शान्तिभिक्षुशास्त्रिणा
लिखितस्य प्राक्कथनस्य मूलपाठः]

प्राक्कथन

बुद्धोदय संस्कृत का एक गीतिकाव्य है। यह दस प्रसंगों में गुम्फित है। प्रत्येक प्रसंग में दस शार्दूलविक्रीडित पद्य तथा तीन गेयपद हैं। यों रचा हुआ यह ग्रन्थ भगवान् बुद्ध के अवतीर्ण होने से प्रारम्भ होता है तथा बोधिलाभ एवं धर्मदेशना पर परिसमाप्त होता है।

संस्कृत में भगवज्जीवन पर एक बहुत छोटे गीतिकाव्य का अभाव बहुत खल रहा था। गीत-गोविन्द के पाठक सिंहल बौद्धों की यह उत्कट इच्छा थी कि तथागत के जीवन पर भी कुछ पद्य एवं गेयपद पढ़ने को मिलें।

सिंहल में मैंने अपनी षष्ठिपूर्ति सन् उन्नीस सौ बहत्तर के अन्त में सत्ताईस दिसम्बर को की। उससे पूर्व ही बुद्धोदय तथा बुद्ध-विजय निर्मित हो चुके थे। पांच सहस्र श्लोकों का बुद्ध विजय काव्य सन् उन्नीस सौ चौहत्तर में छप गया था और उस पर शोधकर एक शोधार्थी को एम० फिल तथा एक अन्य शोधार्थी को पी० एच० डी० की उपाधि भी मिल चुकी थी। कवि को भी साहित्य अकादमी पुरस्कार उन्नीस सौ सतहत्तर वर्ष का मिल गया था। पर बुद्धोदय की ओर किसी की दृष्टि नहीं गई थी। बुद्धोदय का उल्लेख बुद्ध-विजय में यों हुआ है–

बुद्धोदयं मया गीतं स्वल्पग्रन्थं मनोरमम्।
तथाप्यतृप्तं चित्तं मे नित्यं बुद्धपरायणम्[1]॥

वाराणसी के एक मित्र इसे प्रकाशनार्थ ले गये थे। पर प्रकाशन हुआ नही और वे मित्र भी अब अदृष्ट हो गए। इधर 'विद्या भारती' पत्रिका के सम्पादक मंडल ने इसे अपनी पत्रिका में प्रकाशित करने की

---

1. श्लोक 1, सर्ग-14, बुद्धविजय काव्य।

बुद्धोदयकाव्यम्
विषयानुक्रमणिका

1.	पुरोवाक्	iii
	(श्रीमतां कुलपतीनाम् आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठिनाम्)	
2.	कवि-परिचयः	v
3.	विद्याभारती-पत्रिकायां प्रकाशितं महाकवेः प्राक्कथनम्	ix
4.	प्रस्तावना	ix
5.	प्रथमः प्रसंगः—जन्ममंगलम्	1
6.	द्वितीयः प्रसंगः—असितागमनम्	12
7.	तृतीयः प्रसंगः—गोपापरिग्रहः	22
8.	चतुर्थः प्रसंगः—निमित्तदर्शनम्	32
9.	पंचमः प्रसंगः—वनविहारः	42
10.	षष्ठः प्रसंगः—अभिनिष्क्रमणम्	52
11.	सप्तमः प्रसंगः—तपश्चरणम्	63
12.	अष्टमः प्रसंगः—मारविजयः	73
13.	नवमः प्रसंगः—संघप्रतिष्ठापनम्	83
14.	दशमः प्रसंगः—बुद्धकायलक्षणम्	93
15.	पुष्पिका	104
16.	परिशिष्टानि	106
	(क) प्रथमं परिशिष्टम्	106
	विद्याभारती-पत्रिकायां प्रकाशितस्य सम्पादकीयस्य मूलपाठः	

सुगतकविरत्न-

शान्तिभिक्षुशास्त्रिकृतं

बुद्धोदयकाव्यम्

प्रथमः प्रसंगः

जन्ममंगलम्

स्नेहार्द्रस्तनुते सुखानि सततं यो दुःखिनां जीवने,
मैत्र्या निर्भयतां दधाति विपुलां यो जीवतां मानसे।
विश्वस्ता जनतेह मातरि यथा यस्मिन् सुलब्धोत्सवा,
कारुण्यामृतसारवान् विजयतां सत्त्वः स कोप्युत्तमः।।1।।

स्नेह से पसीजा हुआ जो निरन्तर दुःखियों के जीवन में सुखसंचार करता है, जो अपनी मैत्री से प्राणियों के हृदय में परम निर्भीकता का भाव भर देता है, जिसमें माता के समान जनता विश्वास करती हुई उत्सव मनाने लगती है, उस करुणा रूपी अमृत के सारभूत किसी उत्तम सत्त्व की यहां विजय हो।।1।।

यो लोकाय वरो वरं वितरति प्रीत्युत्तमेनात्मना
शल्यान्युद्धरतीह जीवनपथाद् यो जीवतां भूतये।
लोकः शापशरौ न जातु लभते यस्मादुदाराशयात्
सर्वाशापरिपूरणाय जगतस्तं बोधिसत्त्वं भजे।।2।।

जो श्रेष्ठ-सत्त्व अपने प्रेम से पूर्ण उत्तम मन से लोक को वर-प्रदान करता है, जो प्राणियों के अभ्युदय के लिए उनके जीवन मार्ग के कांटों को दूर कर देता है, जो उदार हृदय दुनिया में किसी को न कोसता है, न किसी पर हथियार उठाता है, जगत् की सब आशाओं को परिपूर्ण करने वाले, उस बोधिसत्त्व का मैं भजन करता हूं।।2।।

जो रूप से रमणीय होगी, गुणों से चित्त को आनन्दित करने वाली होगी, जो मुझ में ही रमेगी और बाहर की भूमि एवं धन-सम्पत्ति की चिन्ता नहीं करेगी, धर्मचर्या में एकमात्र सहायक, उस सुन्दर एवं सुकुमारी कुमारी का मैं वरण करूंगा।।अ।।

जातायामपि महाकुले यस्यां न भवेदभिमानः।
हीनकुलेऽपि समुत्पन्नायामपि नहि भवेद् विमानः।।
वृणुयामहं कुमारीम्।
तां धर्माचरणैकसहायां कमनीयां सुकुमारीम्।।आ।।

महाकुल में उत्पन्न होकर जिसमें अभिमान न होगा तथा हीन कुल में उत्पन्न होकर भी जो (मन में अपने को) अपमानित नहीं अनुभव करेगी, धर्मचर्या में एकमात्र सहायक, उस सुन्दर एवं सुकुमारी कुमारी का मैं वरण करूंगा।।आ।।

आवाहेऽथ विवाहे जातिं या गणयेन्न सुशीला।
यान्त्यायान्ति गुणा जातिं दृष्ट्वा न हीति मतिशीला।।
वृणुयामहं कुमारीम्।
तां धर्माचरणैकसहायां कमनीयां सुकुमारीम्।।इ।।

जो कन्या के देने तथा लेने में जाति का विचार करने वाली नहीं होगी, गुण किसी की जाति को देखकर नहीं आते-जाते हैं—ऐसा जो मन में मनन करने वाली होगी, धर्मचर्या में एक मात्र सहायक, उस सुन्दर एवं सुकुमारी का मैं वरण करूंगा।।इ।।

या प्रोषिते न पत्यौ विहरेत् कदापि परगतचित्ता।
या व्यभिचरति पतिं न भाग्यवैगुण्येऽप्यपगतवित्ता।।
वृणुयामहं कुमारीम्।
तां धर्माचरणैकसहायां कमनीयां सुकुमारीम्।।ई।।

जो पति के प्रवासी होने पर कभी भी पर पुरुष में मन लगा कर विहार करने वाली नहीं होगी, जो भाग्य की उलट-पलट से निर्धन होकर भी पतिव्रता धर्म नहीं तोड़ेगी, धर्मचर्या में एक मात्र सहायक, उस सुन्दर एवं सुकुमारी कुमारी का मैं वरण करूंगा।।ई।।

श्वश्रूं मात्रीयेत् सततं या सौभाग्येऽपि न मत्ता।
पित्रीयेत् श्वशुरं कुशला कुलकर्मसु सदाप्रमत्ता।

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली